Dated 20/08/2020

B.A Part 2 (H) Philosophy

S/o अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य की व्याख्या करें।

Ans. स्पिनोजा के अनुसार "द्रव्य वह है जिसकी सत्ता स्वतंत्र हो तथा जिसका ज्ञान किसी दूसरे ज्ञान की अपेक्षा न करता हो। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर ही परम द्रव्य है जिससे सम्पूर्ण सृष्टि उद्भूत है। स्पिनोजा द्वारा दिये गये द्रव्य की परिभाषा से स्पष्ट होता है कि द्रव्य स्वतंत्र है, निरपेक्ष है, अद्वितीय है अपरिच्छिन्न अपरिमित तथा स्वतः सिद्ध है। स्पिनोजा का द्रव्य उपनिषद के ब्रह्म के समान निर्गुण और निराकार है। स्पिनोजा का द्रव्य या ईश्वर के दो स्वरूप हैं:-
(i) निर्गुण (ii) सगुण

प्रथमतः स्पिनोजा का द्रव्य मन और वाणी के परे एक अद्वितीय रूप है। यह उपनिषद के निर्गुण ब्रह्म के समान है। द्वितीयतः स्पिनोजा का द्रव्य स्वयं निराधार होते हुए भी सृष्टि का आधार है यानि वह सृष्टिकर्ता भी है। अतः उपनिषद में सृष्टिकर्ता होना ब्रह्म का तटस्थ लक्षण माना गया है। यह सगुण रूप है। स्पिनोजा के दर्शन में देकार्त का द्वैतवाद अद्वैतवाद में ईश्वरवाद सर्वेश्वरवाद में क्रिया-प्रतिक्रियावाद समानान्तर में परिणत हो जाता है। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर सृष्टि का उपादान और निमित्त दोनों कारण है। सृष्टि स्रष्टा का उसी प्रकार अनिवार्य परिणाम है, जिस प्रकार तीनों कोण त्रिभुज के परिणाम हैं। ईश्वर को सृष्टि का कारण कहने से स्पिनोजा का तात्पर्य यह है कि ईश्वर सृष्टि अधिष्ठान है। सृष्टि की स्थिति स्रष्टा के बाहर और उससे स्वतंत्र नहीं होती। अतः ईश्वर सृष्टि का 'परिणाम' है, जैसे दूध जमकर दही बन जाता है या सेब पककर लाल हो जाता है। सृष्टि ईश्वर का स्वभाव है। उनकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।